प्रबंधन : सभी आक्रांत फलों को चुनकर नष्ट कर दें। प्रति हेक्टेयर 8–10 फल मक्खी फेरोमोन प्रपंच ट्रैप का इस्तेमाल करें। रासायनिक उपचार के लिए मालाथियान 50 ई.सी. 1.5 मि.ली. पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

नेनुआ के प्रमुख कीट :

फल मक्खी : यह सब्जियों को क्षति पहुँचाने वाला प्रमुख कीट है। घरेलू मक्खी की तरह दिखाई देने वाली भूरे रंग की होती है। मादा कीट फलों के अन्दर अंडे देती है, जिससे पिल्लू निकल कर फलों के गुदे को खाता है, जिसके कारण फल सड़ जाता है।

प्रबंधन : कद्दू में फल मक्खी कीट की तरह।

करेला के प्रमुख कीट :

फलमक्खी : यह करेला का एक महत्त्वपूर्ण कीट है जो घरेलू मक्खी की तरह दिखने वाला भूरे रंग का होता है। इसकी मादा फलों के अन्दर अंडे देती है। अंडे से पिल्लू निकलकर अन्दर ही अन्दर फलों के भीतरी भाग को खाता है जिसके कारण फल नष्ट हो जाता है।

प्रबंधन : कद्दू में फल मक्खी कीट की तरह।

परवल के प्रमुख कीट :

लाल भृंग : परवल मे पत्ती बनने के समय इस कीट का आक्रमण होता है। कीट पत्तियों को खाकर नष्ट कर देता है जिससे पौधे मर जाते हैं।

प्रबंधन : नये पौधों के पत्तों पर राख में किरासन तेल मिलाकर सुबह में भुरकाव करें। मालाथियान 5 प्रतिशत धूल या क्वीनलफास 1.5 धूल का 25 कि.ग्रा. प्रति हे. की दर से पौधों पर भुरकाव करें।

फल मक्खी : मुलायम फलों की त्वचा के अन्दर फलमक्खी की मादा कीट अंडे देती है। अण्डे से कीट के पिल्लू निकलकर फलों के गदे को खाता है, जिससे बाद में फल सड़ जाता है।

प्रबंधन : कद्दू में फल मक्खी कीट की तरह।

प्रमुख रोग:–

लत्तीदार सब्जियों में एन्थ्राकनोज, मोजैक, पर्णदाग एवं जड़–गलन नामक बीमारी मुख्य रूप से लगती है। एन्थ्रोकनोज की बिमारी में पत्तियों एवं तनों पर धब्बे हो जाते हैं जिससे ये काले पड़ जाते हैं। इस रोग से बचने के लिए इमीसान–6 का 2.0 ग्राम अथवा बेविस्टीन 1.0 ग्राम/कि.ग्रा. बीज की दर से बीजोपचार करके ही बीज बोना चाहिए। खड़ी फसल मे लगे रोगों से बचाव के लिये मेंकोजेव नामक फफूँदनाशक दवा 1.5 ग्राम प्रति ली. की दर से घोल बनाकर पौधों पर छिड़काव करना चाहिए। मोजैक नामक बीमारी में पत्ते सिकुड़ जाते हैं। इसके नियंत्रण के लिए प्रतिरोधी किस्मों को लगाना चाहिये। यह विषाणु जनित रोग है। जिसका फैलाव कीड़ों द्वारा होता है। इसके लिये कीटनाशी दवा के व्यवहार से इस रोग को कम किया जा सकता है। पर्णदाग बीमारी में पत्तियों पर गहरे भूरे धब्बे हो जाते हैं और पत्तियाँ बाद में सूख जाती हैं। इसके निदान हेतु रिडोमिल 1.0–1.5 ग्राम या मटे लॉक्सील फफूँद नाशक 1.5 ग्राम दवा प्रति ली. पानी में घोल बनाकर पौधों पर कम से कम दो छिडकाव करना चाहिये। इससे रोगों से बचाव हो जाता है।

कृषि विज्ञान केन्द्र, सुजानी, देवघर, झारखंड-814152
कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, क्षेत्र-4, पटना

KVK-DEOGHAR-2024

कद्दूवर्गीय सब्जियों में लगने वाले कीट–व्याधि एवं रोकथाम

सम्पादक
डॉ0 राजन कुमार ओझा
वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

आलेख
डॉ0 विवेक कश्यप
वैज्ञानिक (पौध संरक्षण)

कृषि विज्ञान केन्द्र, सुजानी, देवघर–814152 (झारखंड)
कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, क्षेत्र–4, पटना

कीट प्रबंधन

- **सफेद लट**: खडी फसल में सफेद लट का नियंत्रण भी आवश्यक है। इसके लिए इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. 300 मिली लीटर या क्यूनालोपफॉस 25 ई.सी. 4 लीटर प्रति हैक्टेयर की दर से सूखी बजरी या मिट्टी में मिलाकर पौधों की जड़ों के पास डालकर हल्की सिंचाई कर दें।
- **दीमक**: खडी फसल में इसका प्रकोप दिखाई देने पर क्लोरोपायरीपफॉस 20 ई.सी. 4 लीटर प्रति हैक्टेयर की दर से सिंचाई के पानी के साथ दें।

फसल की खुदाई व सुखाना

मूंगफली की पत्तियां, जब पीली पडने लगें, तो शाम को सिंचाई करें। अगली सुबह हाथ या ग्राउण्ड नट डिगर द्वारा पौधों को जडों से उखाडकर छोटी–छोटी ढेरियों में खुली धूप में रख दें। इसके 7–10 दिनों बाद फलियां अच्छी तरह सूख जाएं, तो इन्हें तोडकर अलग कर लें।

बीज की उपज

मूंगफली की पैदावार किस्मानुसार असिंचित क्षेत्रों में 20–25 क्विंटल तथा सिंचित क्षेत्रों में 30–40 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक हो जाती है।

भण्डारण

बीजोत्पादन हेतु फलियों को 8–10 प्रतिशत नमी की मात्रा तक अच्छी तरह सुखाकर ही भण्डारण करना चाहिए। अन्यथा नमी की वजह से बीजों में एस्परजिलस नामक फफूंद लगकर एक विषैला पदार्थ एफ्रलाटोक्सिन बना देती है। इससे मूंगफली खाने योग्य नही रहती है और बीज की अंकुरण क्षमता पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। मूंगफली का भण्डारण पॉलीलाइंड गनी बैग्स में करना अधिक उपयुक्त रहता है।

कृषि विज्ञान केन्द्र, सुजानी, देवघर, झारखंड-814152
कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, क्षेत्र-4, पटना

RE:7992457574/Jan102025

KVK-DEOGHAR-2024

भाकृअनुप
ICAR

मूंगफली की खेती

सम्पादक
डॉ० राजन कुमार ओझा
वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
कृ. वि. के. सुजानी, देवघर

आलेख
डॉ० विवेक कश्यप
विषय वस्तु विषेशज्ञ (पौध संरक्षण)
श्री शॉन चक्रवर्ती
विषय वस्तु विषेशज्ञ (कृषि मौसम विज्ञान)

संकुल अग्रिम पंक्ति प्रत्यक्षण– तेलहनी योजना (2024–25) के अंतर्गत कृषि उपयोगी बुलेटिन

कृषि विज्ञान केन्द्र, सुजानी, देवघर–814152 (झारखंड)
कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, क्षेत्र–4, पटना

पौध संरक्षण

रोग

- फसल बोने के बाद से ही फसल निगरानी करें। यदि सम्भव हो तो लाइट ट्रेप तथा फेरोमेन ट्रेप का उपयोग करें।
- बीजोपचार आवश्यक है। उसके बाद रोग नियंत्रण के लिये फंफूद के आक्रमण से बीज सडन रोकने हेतु कार्बेडाजिम 1 ग्राम / 2 ग्राम थीरम के मिश्रण से प्रति किलो ग्राम बीज उपचारित करना चाहिये। थीरम के स्थान पर केप्टान एवं कार्बेडाजिम के स्थान पर थायोफेनेट मिथाइल का प्रयोग किया जा सकता है।
- पत्तों पर कई तरह के धब्बे वाले फफुंद जनित रोगों को नियंत्रित करने के लिये कार्बेडाजिम 50 डब्ल्यू.पी. या थायोफेनेट मिथाइल 70 डब्ल्यू.पी. 0.05 से 0.1 प्रतिशत से 1 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी का छिड़काव करना चाहिये। पहला छिड़काव 30–35 दिन की अवस्था पर तथा दूसरा छिड़काव 40–45 दिन की अवस्था पर करना चाहिये।
- बैक्टीरियल पश्च्यूल नामक रोग को नियंत्रित करने के लिये स्ट्रेप्टोसाइक्लीन या कासूगामाइसिन की 200 पीपीएम 200 मिग्रा दवा प्रति लीटर पानी के घोल और कॉपर आक्सीक्लोराइड 0.2 (2 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल मे मिश्रण करना चाहिये। इसके लिये 10 लीटर पानी में 1 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लीन एवं 20 ग्राम कॉपर ऑक्सीक्लोराइड दवा का घोल बनाकर उपयोग कर सकते हैं।
- पीला मोजेक प्रभावित क्षेत्रों में रोग के लिये ग्राही फसलों (मूंग, उडद, बरबटी) की केवल प्रतिरोधी जातियां ही गर्मी के मौसम में लगायें तथा गर्मी की फसलों मे सफेद मक्खी का नियमित नियंत्रण करें।
- नीम की निम्बोली का अर्क डिफोलियेटर्स के नियंत्रण के लिये कारगर साबित हुआ है।

फसल की कटाई एवं गहाई

अधिकांश पत्तियों के सूख कर झड़ जाने पर और 10 प्रतिशत फलियां के सूख कर भूरी हो जाने पर फसल की कटाई कर लेना चाहिये। पंजाब 1 पकने के 4–5 दिन बाद, जे.एस. 335, जे.एस. 76–205 एवं जे.एस. 72–44, जेएस 75–46 आदि सूखने के लगभग 10 दिन बाद चटकने लगती है। कटाई के बाद गड्डों को 2–3 दिन तक सुखाना चाहिये। जब कटी फसल अच्छी तरह सूख जाये तो गहाई कर दोनों को अलग कर देना चाहिये। फसल गहाई थ्रेसर, ट्रेक्टर, बैलों तथा हाथ द्वारा लकडी से पीटकर करना चाहिये। जहां तक सम्भव हो बीज के लिये गहाई लकडी से पीट कर करना चाहिये, जिससे अंकुरण प्रभावित न हो।

कृषि विज्ञान केन्द्र, सुजानी, देवघर, झारखंड-814152
कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, क्षेत्र-4, पटना

RE:7992457574/Jan102025

KVK-DEOGHAR-2024

सोयाबीन की लाभकारी खेती

सम्पादक
डॉ० राजन कुमार ओझा
वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
कृ. वि. के. सुजानी, देवघर

आलेख
डॉ० विवेक कश्यप
विषय वस्तु विषेशज्ञ (पौध संरक्षण)
श्री शॉन चक्रवर्ती
विषय वस्तु विषेशज्ञ (कृषि मौसम विज्ञान)

कृषि विज्ञान केन्द्र, सुजानी, देवघर-814152 (झारखंड)
कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, क्षेत्र-4, पटना

फूलों, तनी तथा फलियों के रस चूसते हैं, इसका आक्रमण अक्टूबर से फसल कटने तक कभी भी हो सकता है, इसके नियंत्रण के लिए डाईमेथोएट 30 ई.सी. 1 लीटर या फेंटोथियान 50 ई. सी. 1.5 लीटर मात्रा की 700 से 800 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिए।

माहू की सबसे बड़ी समस्या है, यह पंखहीन तथा पंख युक्त हल्के सिलेटी या हरे रंग का कीट होता है, इस कीट के प्रौढ़ तथा शिशु पौधों के कोमल तनों, पत्तियों, फूली एवम नयी फलियों के रस चूसते हैं, इस कीट का प्रकोप दिसंबर से मार्च तक रहता है, इसके नियंत्रण के लिए डाईमेथोएट 30 ई.सी. 1 लीटर फेंटोथियान 50 ई.सी. 1 लीटर मात्रा की 700 से 800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना अति आवश्यक है।

फसल की कटाई और भण्डारण

सरसों की फसल में जब 75 प्रतिशत फलियाँ सुनहरे रंग की हो जाए, तब फसल को काटकर, सुखाकर या मडाई करके बीज अलग कर लेना चाहिए, सरसों के बीज को अच्छी तरह सुखाकर ही भण्डारण करना चाहिए।

उपज

असिंचित क्षेत्रों में इसकी पैदावार 20 से 25 किंवटल तक तथा सिंचित क्षेत्रों में 25 से 30 किंवटल प्रति हैक्टर तक प्राप्त हो जाती है।

RE:7992457574/Jan102025

KVK-DEOGHAR-2024

सरसों की खेती

सम्पादक
डॉ० राजन कुमार ओझा
वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
कृ. वि. के. सुजानी, देवघर

आलेख
डॉ० विवेक कश्यप
विषय वस्तु विषेशज्ञ (पौध संरक्षण)
श्री शॉन चक्रवर्ती
विषय वस्तु विषेशज्ञ (कृषि मौसम विज्ञान)

संकुल अग्रिम पंक्ति प्रत्यक्षण– तेलहनी योजना (2024–25) के अंतर्गत कृषि उपयोगी बुलेटिन

कृषि विज्ञान केन्द्र, सुजानी, देवघर–814152(झारखंड)
कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान,क्षेत्र-4,पटना

400-500 ग्राम बीज प्रति हेक्टेयर कि जरूरत होती है। संकर किस्मों के बीज की मात्र प्रति हेक्टेयर 200 ग्राम है। पौधों को गलने से रोकने के लिए बीज को एग्रोसन जी.एन.से शोधित करना चाहिए। 2 ग्राम दवा प्रति किलोग्राम बीज के लिए पर्याप्त होती है। बीज के क्यारियों में जिसमें पानी की समुचित निकास कि व्यवस्था हो। बीज को बोने के समय इन्हें मिट्टी में भली भांति मिलाकर बोना चाहिए और गोबर की सड़ी खाद तथा हल्की बालू कि परत से ढक देना चाहिए। अगर आवश्यकता हो तो फव्वारे से हल्की सिंचाई कर देना चाहिए। जब बीजों का अंकुरण हो जाय, तब 0.2: डाईथेन एम-45 का घोल का नियमित रूप से छिड़काव करना चाहिए ताकि पौधों को कोई फफूंदजनित रोग न लग सके। फलों कि गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए 0.3 प्रतिशत बोरेक्स का घोल फल आने पर 3-4 छिड़काव किया जाना अनिवार्य है।

पौधों संरक्षण:-

कीट की रोकथाम

फल छेदक: यह टमाटर का सबसे बड़ा शत्रु है। पत्तों और फूलों को खाने के बाद यह फल से छेदकर अंदर से खाना शुरू कर देता है।

जैसिड: यह हरे रंग के छोटे-छोटे कीट होते हैं, जो पौधों से रस चूस लेते हैं, जिसके कारण पौधों की पत्तियाँ सूख जाती हैं।

सफेद मक्खी: ये सफेद छोटे-छोटे कीड़े होते हैं जो पौधों से उनका रस चूस लेते हैं। इनसे पत्तियों के मुड़ जाने वाली बीमारी (मोजेक) फैलती है।रोकथाम के लिए फसल बढ़वार की आरंभिक अवस्था में 0.05 प्रतिशत रोगी या मेटासिस्टॉक्स का छिड़काव करना चाहिए। फल छेदक से प्रभावित फलों और एस कीड़े के अण्डों को इकट्ठा करके नष्ट कर दें फिर छिड़काव करें। एक पखवाड़े के अंतराल पर यह छिड़काव दूबारा करना चाहिए।

बीमारियाँ

यह फसल को नर्सरी में सबसे हानि पहुंचाता है। रोकथाम के लिए प्रति किलोग्राम बीज को 2 ग्राम कैप्टाफ या वेविस्टिन से उपचारित करना चाहिए। क्यारियों की मिट्टी में 2 ग्राम थीरम या कैप्टाफ एक लीटर पानी में घोलकर हर 10-15 दिनों में छिड़काव करना चाहिए।

अगेती झुल्सा:- पत्तों और फलों में गहरे भूरे रंग के धब्बे आते हैं। रोकथाम के लिए 10-15 दिन के अंतराल पर 0.2 प्रतिशत डाइथेन एम-45 के घोल का एक छिड़काव करें।

पछेती झुल्सा:- टमाटर के पौधे के किसी भी हवाई हिस्से पर पछेती झुल्सा के रोग लक्षण दखे जा सकते है। सक्रंमित पत्तियों में आमतौर पर छोटे, पानी से भरे क्षेत्र होते हैं जो तेजी से बड़े होकर बैंगनी-भूरे रंग के हो जाते हैं, और चिकना दिखाई दते हैं। पत्तियों के निचले भाग पर या निचले तने पर धब्बों केचारों ओर भूरे-सफ़ेद कवक जाल दिखाई दे सकते हैं। तने और डंठल पर, बाद में भूरे रंग के धब्बे दिखाई देते हैं। फूल मलिन होकर गिर जाते है एवं संक्रमित फल भी धब्बेदार दिखाई देते है। इसके लिए कॉपर ऑक्सी क्लाराइड 50 प्रतिशत WP @ 2-3 ग्राम प्रति लीटर तथा पत्तियों पर धब्बा रोग के लिए छिड़काव करना चाहिए

अच्छे फसल व रोग से बचाव के विशेष जानकारी के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र, देवघर के वैज्ञानिक व विषय वस्तु विशेषज्ञ से संपर्क कर सकते हैं।

कृषि विज्ञान केन्द्र, सुजानी, देवघर, झारखंड-814152
कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान,क्षेत्र-4,पटना

RE: 7992457574 / JAN2023

KVK-DEOGHAR-2024

बैंगन तथा टमाटर के प्रमुख रोग एवं प्रबंधन

सम्पादक
डॉ० राजन कुमार ओझा
वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

आलेख
डॉ० विवेक कश्यप
वैज्ञानिक (पौध संरक्षण)

कृषि विज्ञान केन्द्र, सुजानी, देवघर-814152 (झारखंड)
कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान,क्षेत्र-4,पटना

आने के बाद हाथ में दस्ताने पहनकर या रोयेदार कपडा लेकर फसल के मुन्दको अर्थात फूलो पर चारो ओर धीरे से घुमा देने से परिषेचन की क्रिया हो जाती है यह क्रिया प्रातः 7 से 8 बजे के बीच में कर देनी चाहिए।

फसल सुरक्षा

सूरजमुखी में कई प्रकार के कीट लगते है जैसे की दीमक हरे फुदके डसकी बग आदि है। इनके नियंत्रण के लिए कई प्रकार के रसायनों का भी प्रयोग किया जा सकता है। मिथाइल ओडिमेंटान 1 लीटर 25 ई सी या फेन्बलारेट 750 मिली लीटर प्रति हैक्टर 800 से 1000 लीटर पानी में घोलकर छिडकाव करना चाहिए।

कटाई और मड़ाई

जब सूरजमुखी के बीज कड़े हो जाए तो मुन्डको की कटाई करके या फूलो के कटाई करके एकत्र कर लेना चाहिए तथा इनको छाया में सुखा लेना चाहिए इनको ढेर बनाकर नहीं रखना चाहिए इसके बाद डंडे से पिटाई करके बीज निकल लेना चाहिए साथ ही । सूरजमुखी से बीज निकालने में थ्रेशर का प्रयोग करना भी उपयुक्त होता है।

भण्डारण

बीज निकलने के बाद अच्छी तरह सुखा लेना चाहिए बीज में 8 से 10 प्रतिशत नमी से आधिक नहीं रहनी चाहिए। बीजों से 3 महीने के अन्दर तेल निकल लेना चाहिए अन्यथा तेल में कड़वाहट आ जाती है, अर्थात पारिस्थिकी के अंतर्गत भंडारण किया जा सकता है।

सूरजमुखी के दोनों तरह की प्रजातियों की पैदावार अलग–अलग होती है। संकुल या सामान्य प्रजातियों की पैदावार 12 से 15 किंवटल प्रति हैक्टर होती है तथा संकर प्रजातियों की पैदावार 20 से 25 किंवटल प्रति हैक्टेयर प्राप्त होती है।

कृषि विज्ञान केन्द्र, सुजानी, देवघर, झारखंड-814152
कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान,क्षेत्र-4,पटना

RE:7992457574/Jan102025

KVK-DEOGHAR-2024

भाकृअनुप ICAR

सूरजमुखी की वैज्ञानिक खेती

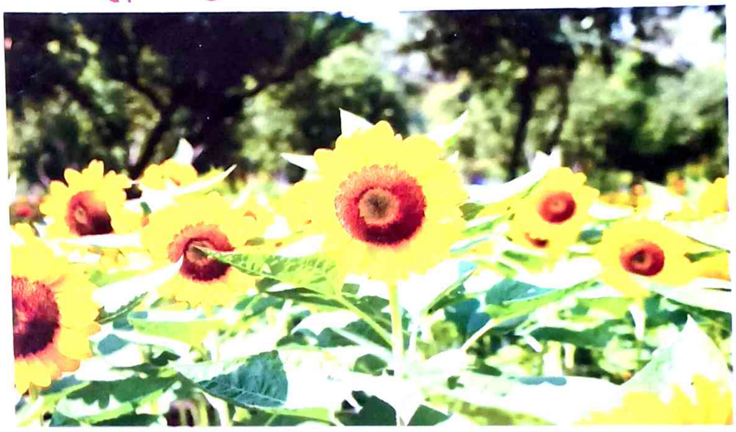

सम्पादक
डॉ० राजन कुमार ओझा
वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
कृ. वि. के. सुजानी, देवघर

आलेख
डॉ० विवेक कश्यप
विषय वस्तु विषेशज्ञ (पौध संरक्षण)
श्री शॉन चक्रवर्ती
विषय वस्तु विषेशज्ञ (कृषि मौसम विज्ञान)

संकुल अग्रिम पंक्ति प्रत्यक्षण– तेलहनी योजना (2024–25) के अंतर्गत कृषि उपयोगी बुलेटिन

कृषि विज्ञान केन्द्र, सुजानी, देवघर–814152(झारखंड)
कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान,क्षेत्र-4,पटना

बुवाई के समय 20 किलोग्राम यूरिया, 1 क्विंटल सिंगल सुपर फास्फेट तथा 15 किलोग्राम म्यूरियट ऑफ पोटाश का व्यवहार हल द्वारा खोदी गयी क्यारियों में करना चाहिए तथा बुवाई के एक माह बाद टॉप ड्रेसिंग के रूप में 20 किलोग्राम यूरिया का व्यवहार करना चहिये।

निकाई एवं गुड़ाई

खेतों को खरपतवार से मुक्त रखने हेतु आवश्यकतानुसार दो–तीन निकाई–गुडाई करना चाहिये। प्रथम गुडाई बुवाई के 25–30 दिनों के बाद करनी चाहिए।

पौधा संरक्षण

सरगुजा एक सख्त फसल है जिसमें किसी रोग के लगने की संभावना बहुत ही कम होती है। कभी–कभी यह पाउडरी मिल्डयू से आक्रांत होता है, जिसके नियंत्रण के लिए अलोसाल नामक दवा की 200 ग्राम मात्रा को 1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।

इस फसल की प्रमुख कीट व्याधि है भुआ पिल्लू। ये पिल्लू पत्तियों को खाने लगते हैं। फलस्वरूप पौधों की बढवार रुक जाती है। आक्रमण के प्रारम्भिक चरण में इसका नियंत्रण पत्तियों पर बैठे कीटों को पैर से मसलकर या इन्हें किरासन तेल में डालकर नष्ट करके किया जा सकता है। जब आक्रमण भयंकर रूप से हो जाये तब नुवान दवा की 300 मि. ली. मात्रा को 800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।

कटनी, दौनी एवं भंडारण

यह फसल दिसम्बर माह के दौरान पक जाती है। पौधों की जड़ से काटकर धूप में एक सप्ताह तक सुखाया जाता है और उसके बाद डंडों से पीटकर फसल की दौनी की जाती है। सूखे हुए बीज का भण्डारण मिट्टी के बर्तनों या कोठियों में किया जाता है।

RE:7992457574/Jan102025

कृषि विज्ञान केन्द्र, सुजानी, देवघर, झारखंड-814152
कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, क्षेत्र-4, पटना

KVK-DEOGHAR-2024

भाकृअनुप ICAR

सरगुजा की उन्नत खेती

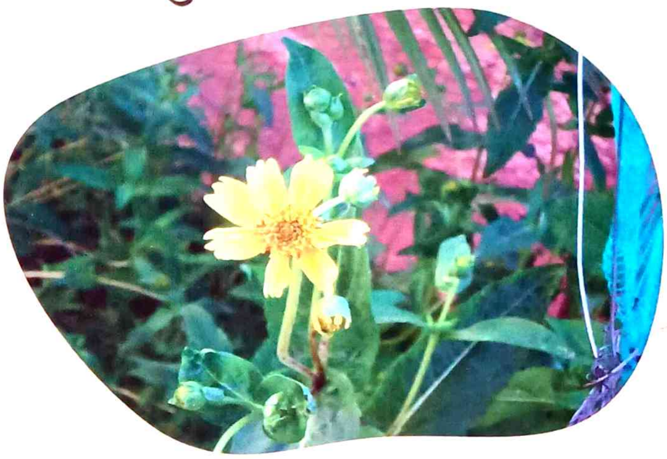

सम्पादक
डॉ० राजन कुमार ओझा
वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
कृ. वि. के. सुजानी, देवघर

आलेख
डॉ० विवेक कश्यप
विषय वस्तु विषेशज्ञ (पौध संरक्षण)
श्री शॉन चक्रवर्ती
विषय वस्तु विषेशज्ञ (कृषि मौसम विज्ञान)

संकुल अग्रिम पंक्ति प्रत्यक्षण– तेलहनी योजना (2024–25) के अंतर्गत कृषि उपयोगी बुलेटिन

कृषि विज्ञान केन्द्र, सुजानी, देवघर–814152 (झारखंड)
कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, क्षेत्र–4, पटना

जल प्रबंधन

अलसी की अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए दो सिंचाइयां आवश्यक हैं। बुआई के 30–45 दिनों के बाद पहली सिंचाई देनी चाहिए तथा दूसरी सिंचाई 75 दिनों के बाद फूल आने से पहले देनी चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण

अलसी की फसल खरपतवार से अधिक प्रभावित होती है, क्योंकि इसकी पत्तियों का क्षेत्र कम होता है। अलसी में खरपतवार उपज व तेल की गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं। इससे बचने के लिए कम से कम दो निराई–गुडाई क्रमशः बुआई के दो से तीन दिनों और चार से पांच सप्ताह बाद करनी चाहिए। रासायनिक दवाओं के द्वारा भी खरपतवारों का आसानी से नियंत्रण किया जा सकता है। बुआई से पूर्व फ्लूक्लोरलिन एक कि.ग्रा. सक्रिय तत्व प्रति हेक्टेयर की दर से 600 लीटर पानी में बने घोल का छिड़काव करके भी खरपतवारों का नियंत्रण किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त एलाक्लोर शाकनाशी के एक कि.ग्रा. सक्रिय तत्व को 500–600 लीटर पानी में घोलकर बुआई के तुरंत बाद अंकुरण से पहले छिड़काव करना चाहिए। यह ज्यादातर खरपतवार को नष्ट कर देता है।

कीट एवं रोग प्रबंधन

अलसी की फसल में लगने वाले प्रमुख रोगों में रस्ट, उकठा और चूर्णिल है। अलसी की फसल कीटों से ज्यादा प्रभावित नहीं होती है। अलसी मिज, कटवर्म और पत्ती खाने वाली सुंडियां कहीं–कहीं पर फसल को हानि पहुंचाती हैं।

कटाई–मड़ाई

अलसी की फसल अच्छी कटाई होने पर अच्छा उत्पादन देती है। प्रायः अलसी की फसल 130–150 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। अलसी के पौधों के तने पीले पड़ जाएं तथा कैप्सूल और पत्तियां सूखनी शुरू हो जाएं और निचले हिस्सों के तनों से पत्तियां गिर जाएं तो यह समझना चाहिए कि फसल कटाई हेतु तैयार है। कटाई हो जाए तो पौधे को बंडल में बांधकर चार से पांच दिनों के लिए धूप में सूखने देना चाहिए। बीज अलग करने के लिए डंडों से पौधों को पीटकर या थ्रेशर का उपयोग करना चाहिए। रेशा प्राप्त करने के लिए अलसी की कटाई, बुआई के लगभग 100 दिनों के बाद करनी चाहिए या फिर फूल आने के एक माह बाद और कैप्सूल जब बन जाए तो उसके दो सप्ताह बाद करनी चाहिए। रेशे के लिए उगाई गई फसल को जड़ से उखाड़ना चाहिए ताकि रेशे की अधिक लंबाई प्राप्त की जा सके। सही समय पर कटाई न होने पर तेल का उत्पादन कम होता है व तेल की गुणवत्ता पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है।

उपज

सिंचित दशाओं में अलसी की 15–20 क्विंटल बीज प्रति हेक्टेयर प्राप्त की जा सकती है, जबकि बारानी दशाओं में 8–10 क्विंटल उपज प्रति हेक्टेयर प्राप्त की जा सकती है।

RE: 7992457574 / JAN2023

कृषि विज्ञान केन्द्र, सुजानी, देवघर, झारखंड-814152
कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान,क्षेत्र-4,पटना

KVK-DEOGHAR-2024

अलसी (तीसी) की वैज्ञानिक खेती

सम्पादक
डॉ० राजन कुमार ओझा
वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
कृ. वि. के. सुजानी, देवघर

आलेख
डॉ० विवेक कश्यप
विषय वस्तु विषेशज्ञ (पौध संरक्षण)
श्री शॉन चक्रवर्ती
विषय वस्तु विषेशज्ञ (कृषि मौसम विज्ञान)

संकुल अग्रिम पंक्ति प्रत्यक्षण– तेलहनी योजना (2024–25) के अंतर्गत कृषि उपयोगी बुलेटिन

कृषि विज्ञान केन्द्र, सुजानी, देवघर–814152(झारखंड)
कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान,क्षेत्र-4,पटना

सूकरों में रोग प्रबंधन सूकरों मे कृमिनाशन सारणी एवं टीकाकरण सारणी

अवस्था	कृमिनाशन का समय	सामान्य कृमिनाशक
मादा	प्रसव के दो हपते के अंदर	एल्बेंडजोल
नर	प्रत्येक 6 मास	फेनबेंडाजोल
शावक	पैदा होने के एक हपते के अंदर	प्राजीक्विंट्ल लेवमिसोल
गर्भ के दौरान	वीनिग के एक हपते के अंदर	पयरेंटल पाइप्राजीन

रोग का नाम	लक्षण	टीकाकरण
सूकर ज्वर	तेज बुखार, दस्त, साँस लेने में कठिनाई, तथा शरीर पर लाला पीले धब्बे होना	(टिशू कल्चे मृत वैक्सीन) 2 महीने या उससे ऊपर तथा 1 वर्ष मे पुन टीकाकरण
खुर मुह पका	बुखार, खुर एव मुह मे छोटे–छोटे घाव, लगडा कर चलना,मुंह मे छाले पड जाना	टिशू कल्चे मृत वैक्सीन 2 महीने या उससे ऊपर तथा 6 महीने में पुन टीकाकरण
सूकर चेचक	बुखार होना, सुस्त पड जाना, कान, गर्दन एव अन्य भागों पर फफोला पड जाना.	म्रत वैक्सीन

सूकरों में प्रजनन प्रबंधन

नर सूकर 8–9 महीनों में पाल देने लायक जो जाते हैं। लेकिन स्वास्थ ध्यान में रखते हुए एक साल के बाद ही इसे प्रजनन के काम में लाना चाहिए। सप्ताह में 3–4 बार इससे प्रजनन काम लेना चाहिए। मादा सूकर भी करीब एक साल में गर्भ धारण करने लायक होती है। अच्छे नर तथा मादा का चुनाव मादा की मां अच्छी नस्त्ल तथा कम अंतराल में एक बार में अधिकतम बच्चे देने वाली हो, चुनी गयी मादा में 12–14 निप्पल होने चाहिये, शरीर बलिष्ट तथा सिर ह्ल्का तथा बीमारी रहित होना चाहिये।नर की मां अच्छी नस्त्ल तथा कम अंतराल में एक बार में अधिकतम बच्चे देने वाली हो, पुट्ठे, पैर तथा शरीर मजबूत होने चाहिये, अंडकोश तंदरुस्त होना चाहिये दो अलग प्रजाति के नर तथा मादा को क्रास कराना जिससे बच्चों में माता तथा पिता से ज्यादा अच्छे गुण आ जायें। देसी मादा को विदेशी नर से क्रास कराने से ज्यादा सम्भावना है कि शावक शारीरिक वजन तथा वृद्धि दर उनके पिता से तथा रोग प्रतिरोधक क्षमता उनकी माता से प्रभावित रहता है। सभी नर बच्चे बेच दे तथा सबसे अच्छी मादा को रख ले। बाहर के झुंड से अच्छा विदेशी नर लाकर क्रास कराये। एक ही प्रजाति के अधिक समानता वाले नर तथा मादा को क्रास कराना जैसे कि भाई बहन,पिता पुत्री, माता–पुत्र समान जीन का जमाव तथा दबे हुये हॉनिकारक विकार फिर से प्रभावित हो जाते है जैसे कम बच्चे पैदा होना, बांझपन, मरे हुये बच्चे पैदा होना। इस प्रक्रिया को इंब्रीडिंग डिप्रेशन कहते हैं। सूकर पालको को इस चीज का विशेष ध्यान रखना चाहिये। छोटे फार्म पर इंब्रीडिंग से बचने के लिये नर सूकर को 2–3 साल मे दूसरे झुंड से बदल लेना चाहिये।

सीमांत किसान,बेरोजगार युवक तथा कोई भी पशुपालक थोडी सी जानकारी के साथ बिना अतिरिक्त व्यय के अपने वर्तमान उद्यम मे सूकर पालन को शामिल करके अच्छा मुनाफा ले सकते है।

कृषि विज्ञान केन्द्र, सुजानी, देवघर, झारखंड-814152
कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान,क्षेत्र-4,पटना

RE: 7992457574/ JAN-2025

KVK-DEOGHAR-2024

सूकर पालन

सम्पादक
डॉ0 राजन कुमार ओझा
वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
कृ. वि. के. सुजानी, देवघर

आलेख
डॉ0 पूनम सोरेन
विषय वस्तु विषेशज्ञ (पशु चिकित्सा विज्ञान)

अनुसूचित जाति उपयोजना के अंतर्गत कृषि उपयोगी बुलेटिन

कृषि विज्ञान केन्द्र, सुजानी, देवघर–814152(झारखंड)
कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान,क्षेत्र-4,पटना

भींगना मुर्गियों का एक एक दूसरे से सट कर रहना, उपचार हेतु एनरोफोलक्सासीन या ओक्सीटेट्रासाइक्लीन 5 ग्राम सुबह शाम 200 चूजों के लिए 5 लीटर पानी में घोलकर 3 से 5 दिन तक दें।

सर्दी के दिनों में मुर्गियों का रख–रखाव: सर्दी के दिनों में वातावरण का तापमान काफी कम रहता है जिसके चलते मुर्गियों के शरीर के तापमान का ह्रास तेजी से होता है और मुर्गियों में मृत्युदर बढ़ जाती है। बाहर से ठंढ़ी हवा घर के अन्दर न आये इसके लिए घर के चारों ओर(जहॉ जाली हो) जूट के बैग का पर्दा उपर से 5 इंच जगह छोड़ कर लगा दें। घर के अंदर का तापमान अगर निम्नतर तापमान (70° F) से कम हो तो घर के अंदर का तापमान बढ़ाने के लिए गैस,हीटर, लैम्प इत्यादि का उपयोग करना चाहिए।

गर्मी के दिनों में मुर्गियों का रख–रखाव : गर्मी के दिनों मे वातावरण का तापमान अधिक रहता है जि के वजह से मुर्गियो में हीट स्ट्रोक (लू लगना) और मृत्युदर बढ़ जाती है । घर इस तरह का बना हो जिसमें हवा का आगमन एवं निकास की समुचित व्यवस्था हो,मुर्गियों को स्वच्छ एवं ठंडे पानी में ग्लुकोज एवं इलेक्ट्राल मिलाकर पिलायें, इससे मुर्गियों मे Dehydration तथा तनाव को रोका जा सकता है । गर्मी के दिनों में (Vitamin B Complex) की मात्रा के 20 से 40% तक बढ़ा देना चाहिए ।

बरसात के दिनों में मुर्गियों का रख – रखाव : बरसात के दिनों मे मुर्गीपालकों को उनके घर का विशेष ध्यान रखना चाहिए, क्योंकि इस समय वातावरण में काफी नमी होती है तथा उमस भरा दिन होता है। इसके साथ ही इस समय मुर्गियों में मृत्यु दर बढ़ जाती है । बरसात आने के पहले घर की मरम्मत अच्छी तरह से करा ले ताकि बरसाती पानी घर के अन्दर न आये ।

आर्थिक विश्लेषण :– दो सौ मुर्गा आंगन बाड़ी में वैज्ञानिक विधि द्वारा उन्नत प्रजाति(सोनाली, वनराजा) पालने से 24,000–30,000 का लाभ होता है।

कृषि विज्ञान केन्द्र, सुजानी, देवघर, झारखंड-814152
कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान,क्षेत्र-4,पटना

RE: 7992457574/ JAN-2025

KVK-DEOGHAR-2024

भाकृअनुप
ICAR

बैकयार्ड मुर्गीपालन

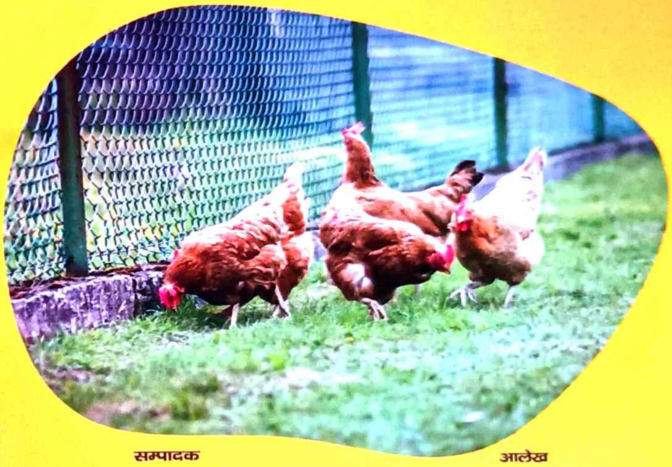

सम्पादक
डॉ० राजन कुमार ओझा
वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
कृ. वि. के. सुजानी, देवघर

आलेख
डॉ० पूनम सोरेन
विषय वस्तु विषेशज्ञ (पशु चिकित्सा विज्ञान)

अनुसूचित जाति उपयोजना के अंतर्गत कृषि उपयोगी बुलेटिन

कृषि विज्ञान केन्द्र, सुजानी, देवघर–814152(झारखंड)
कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान,क्षेत्र-4,पटना

बकरियो का टीकाकरण ही पीपीआर से बचाव का एक मात्र प्रभावी उपाय है। विषाणु जनित रोग होने के कारण, पीपीआर का कोई विषिश्ट उपचार उपलब्ध नहीं है। हालांकि प्रतिजैविक द्वारा द्वितीयक जीवाणुयीय संक्रमण को नियंत्रित कर और परजीवियों को नियंत्रित करने वाली दवाओं का उपयोग करके मृत्युदर को कम किया जा सकता है। सबसे पहले स्वस्थ बकरियों को बीमार बकरियों से अलग रखा जाना चाहिए ताकि रोग को नियंत्रित कर फैलने से बचाया जा सके। इसके बाद बीमार बकरियों का ईलाज शुरू करना चाहिए। पीपीआर महामारी फैलने पर तुरंत ही नजदीकी सरकारी पशु–चिकित्सालय में सूचना देनी चाहिए। भवसन प्रणाली के द्वितीयक जीवाणुयीय संक्रमण को रोकने के लिए पशु–चिकित्सक द्वारा विस्तृत–प्रभावी प्रतिजैविक और दस्त के लिए अतिसाररोधी (दस्तरोधी) दवाओं का प्रयोग किया जाता है। सहायक उपचार के रूप मे ज्वर हटाने वाले दवाई, और मल्टीविटामिन दी जाती है। आँख, नाक के घावों और मुख के आस–पास के जख्मों को साफ रूई के फाहे से सफाई की जानी चाहिए। जख्मों पर बोरोग्लिसरीन का लेप से बकरियों को बहुत ज्यादा फायदा मिलता है। इन बकरियों को खाने के लिए स्वच्छ, मुलायम,नम और स्वादिश्ट पोशक चारा देना चाहिए। मृत बकरियों को जलाकर नश्ट करना चाहिए और साथ ही साथ संक्रमित बाड़े और उपकरणों व बर्तणों की सफाई की जानी चाहिए।

पीपीआर का टीका चार महीने की उम्र में एक मिली. मात्रा में त्वचा के नीचे दिया जाता है। इससे बकरियों में तीन साल के लिए प्रतिरक्षा आ जाती है। सभी नरों और तीन साल तक पाली हुई बकरियों को दोबारा से टीकाकरण करना चाहिए। टीकाकरण से पूर्व कृमिनाशक दवा देना चाहिए। टीकाकरण के बाद कम से कम एक सप्ताह तक बकरियों को परिवहन,खराब मौसम आदि जैसे तनाव प्रदान करने वाली परिस्थियों से मुक्त रखा जाना चाहिए।

नये लाए गए या खरीदे गए बकरियों को दो से तीन हफ्ते तक अलग–थलग (पृथक) रखें। इसके बाद स्वस्थ बकरियों को ही झुण्ड में भामिल करें। बकरी के बाड़े की साफ–सफाई का भी ध्यान रखें। उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखते हुए पीपीआर महामारी से बकरियों को बचाकर बकरी पालक अपने व्यवसाय को लाभकारी बना सकते है।

निष्कर्श:

पीपीआर पेस्टडेस पेटिट्स रूमिनेंट्स विषाणु जनित संक्रामक रोग है।यह संक्रामक रोग महामारी के रूप में बकरियों में फैलती है। विषाणु जनित रोग होने के कारण, पीपीआर का कोई विशिष्ट उपचार उपलब्ध नहीं है। बकरियों का टीकाकरण ही पीपीआर से बचाव का एक मात्र प्रभावी उपाय है। हालांकि प्रतिजैविक द्वारा द्वितीयक जीवाणुयीय संक्रमण को नियंत्रित कर और परजीवियों को नियंत्रित करने वाली दवाओं का उपयोग करके मृत्युदर को कम किया जा सकता है।

कृषि विज्ञान केन्द्र, सुजानी, देवघर, झारखंड-814152
कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान,क्षेत्र-4,पटना

RE: 7992457574/ JAN-2025

KVK-DEOGHAR-2024

भाकृअनुप
ICAR

बकरियों में पीपीआर रोग के कारण, पहचान एवं बचाव

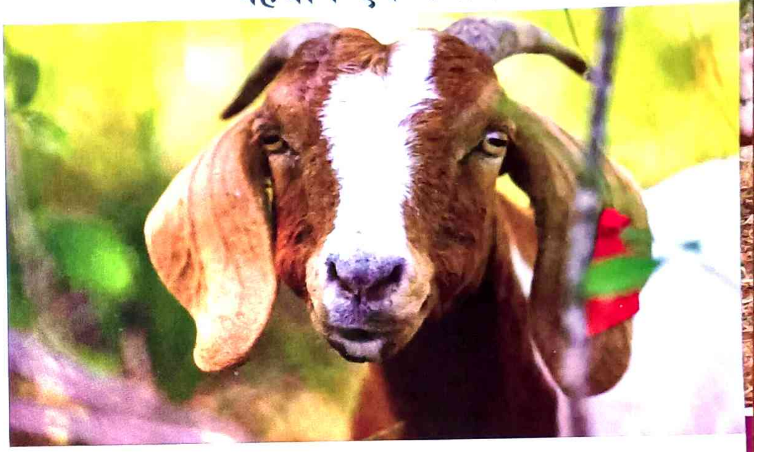

सम्पादक
डॉ० राजन कुमार ओझा
वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
कृ. वि. के. सुजानी, देवघर

आलेख
डॉ० पूनम सोरेन
विषय वस्तु विषेशज्ञ (पशु चिकित्सा विज्ञान)

अनुसूचित जाति उपयोजना के अंतर्गत कृषि उपयोगी बुलेटिन

कृषि विज्ञान केन्द्र, सुजानी, देवघर–814152(झारखंड)
कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान,क्षेत्र-4,पटना

• सूकर ज्वर एवं खुरहा (खुरपका - मुँहपका) का टीका प्रति छः माह पर लगावाना आवश्यक है।

• खाने के समय पशुओं का निरीक्षण अवश्य करना चाहिए क्योंकि खाने के समय बीमार पशु की पहचान तुरंत की जा सकती है। सुस्त, एकान्त, अक्सर सोते रहना, बेचैन रहना इत्यादी बीमार पशुओं के प्रमुख लक्षण हैं। इस परस्थति में तुरंत पशुचिकित्सक से सम्पर्क करना चाहिए।

किसानों को लाभदायक सूकर पालन के लिए निम्न बिन्दुओं पर विशेश ध्यान देना चाहिए

सूकरों के लिए आवास की व्यवस्था में इस बात पर ध्यान रखना चाहिए कि व साफ सुथरे, हवादार एवं नमी रहीत हों। इससे जीवाणुओं, फूफंदो एवं अन्य बिमारीयों के संक्रमण की आशंका कम होती है।

• 4 - 6 सप्ताह में नर बच्चे का जिन्हें प्रजनन के लिए नहीं रखना है, उनका बधिया करा देना चाहिए।

• गर्भवती सूकरी को बच्चा देने के कम से कम 10 दिन पहले प्रसूति गृह में समूचित व्यवस्था के साथ रख देना चाहिए।

• बच्चा देने के बाद सूकरी झाल गिराती है, जिसे तत्काल प्रसूति गृह से निकाल देना चाहिए। क्योंकि यह संकामक होती है।

• नवजात की सफाई एवं खीस पीलाने की व्यवस्था जन्म के तुरंत बाद करना चाहिए।

बीमार होने के लक्षण प्रकट होने पर तुरंत नजदीक के पशु चिकित्सालय / पशु चिकित्सक से संपर्क करें।

कृषि विज्ञान केन्द्र, सुजानी, देवघर, झारखंड-814152
कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान,क्षेत्र-4,पटना

RE: 7992457574/ JAN-2025

KVK-DEOGHAR-2024

भाकृअनुप
ICAR

सूकर पालन

सम्पादक
डॉ० राजन कुमार ओझा
वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
कृ. वि. के. सुजानी, देवघर

आलेख
डॉ० पूनम सोरेन
विषय वस्तु विषेशज्ञ (पशु चिकित्सा विज्ञान)

अनुसूचित जाति उपयोजना के अंतर्गत कृषि उपयोगी बुलेटिन

कृषि विज्ञान केन्द्र, सुजानी, देवघर-814152 (झारखंड)
कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान,क्षेत्र-4,पटना

2. परजीवी से होने वाले प्रमुख बीमारियों के लक्षण एवं उसका रोकथामः–

कृमिरोग	बीमारी के लक्षण	(उम्र)	सेवन करने की अवधि	पशुपालकों को अमल में लायें जाने वाली बातें
कॉक्सीडियो –सिस	➢तीक्ष्ण एवं बदबूदार दस्त ➢बढ़ते हुए बच्चों की बढ़वार रूक जाना ➢पैखाना मे साफ म्यूकस एवं खून आना	1–2 माह की उम्र में।	6–8 माह की उम्र तक।	कॉक्सी मारक दवा जैसे मोनेन्सिन 30 ग्राम प्रति 100 किलो ग्राम दाना मिश्रण में मिलाकर खिलाना है। सभी पशुओं को पशुचिकित्सक की सलाह से दवा देनी चाहिए।
अंतः परजीवी संक्रमण	➢दस्त ➢खून की कमी ➢निचले जबड़े के नीचे सूजन ➢पतला व बदबूदार पैखाना ➢पैखाना के साथ रक्त के धब्बे या म्युकस आना ➢रक्त की कमी ➢दाँत किटकिटाना ➢शारीरिक वृद्धि अवरूद्ध होना	जन्म लेने के 15–20 दिनों के अंदर पहला खुराक उसके एक माह के बाद दूसरा खुराक	वर्ष में दो बार (वर्षा काल से पहले एवं उसके बाद)	सभी पशुओं को पशुचिकित्सक की सलाह से दवा देनी चाहिए।
बाह्यः परजीवी संक्रमण	➢बालों का उड़ना ➢शारीरिक वृद्धि अवरूद्ध होना एवं दुग्ध उत्पादन पर प्रतिकुल प्रभाव पड़ता हैं ➢शरीर के किसी सीन अथवा पूरे शरीर पर समान रूप से खुजली जैसे लक्षण	हर उम्र में।	सर्दियों तथा वर्षाकाल के शुरू एवं अंत में।	सभी पशुओं को एक साथ दवा से नहलाना /पोछना एवं पशुशाला में स्प्रे करना चाहिए।

नोट :– मुख्य कृमिनाशक दवाई : एल्बेंन्डाजोल 7–7.5 मि0 ग्रा0 प्रति कि0 ग्रा0 वजन भार एवं फेनबेंडाजोल@ 5–7.5 मि0 ग्रा0 प्रति कि0 ग्रा0 शरीर भार के लिए उपयोग किया जाता हैं। एल्बैन्डाजोल दवाई का प्रयोग गर्भधारण किये हुए पशुओं में नहीं करना चाहिए।

कृषि विज्ञान केन्द्र, सुजानी, देवघर, झारखंड-814152
कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान,क्षेत्र-4,पटना

RE: 7992457574/ JAN-2025

KVK-DEOGHAR-2024

गाय व भैंस के प्रमुख रोग व रोकथाम

सम्पादक
डॉ0 राजन कुमार ओझा
वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
कृ. वि. के. सुजानी, देवघर

आलेख
डॉ0 पूनम सोरेन
विषय वस्तु विषेशज्ञ (पशु चिकित्सा विज्ञान)

अनुसूचित जाति उपयोजना के अंतर्गत कृषि उपयोगी बुलेटिन

कृषि विज्ञान केन्द्र, सुजानी, देवघर-814152(झारखंड)
कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान,क्षेत्र-4,पटना

चारे को सुरक्षित रखने का दूसरा तरीका है 'हे' बनाकर चारे को रखना। हरे चारे को काटकर इसे खेत में इस प्रकार सुखाया जाता है कि उसमें नमी 15 प्रतिशत रहे ताकि पत्तियां, डंठल से अलग न हो जाये और उनमें से खनिज, प्रोटीन, विटामीन, शुष्क पदार्थ का नुकसान कम हो। चारे की फसलें जो पतली तने वाली होती है सूखने के बाद पौष्टिक और स्वादिष्ट रहती है। मक्का, मकचरी और जई को फूल लगने के समय काटे। मार्च और अप्रैल के महीने में बरसीम को एक माह के अन्दर से काटना चाहिए। लूसर्न को तब काटा जाए जबकि 20 प्रतिशत पौधों से फूल आने लगे। यदि फसल की कटाई दोपहर में करें तो अच्छा होगा क्योंकि नमी कम होगी तथा फसल जल्दी सूखने में मदद मिलेगी। ''हे'' बनाने के लिए उचित यह है कि पदार्थ का काटकर सूरज की रोशनी में पक्के फर्श पर सुखना चाहिए। तिरपाल पर रखकर सुखा लिया जाय और बीच में उलट-पलट करते रहें। जब नमी 18-20 प्रतिशत कम हो जाये तो ''हे'' को सुरक्षित स्थान पर रख दें। जहां पर ''हे'' नमी से बची रहे तथा जब हरे चारे की कमी आप महसूस करें। उससमय आप इसका उपयोग कर सकते हैं। साइलेज और हे के द्वारा चारे की कमी के दिनों में दुग्ध उत्पादन में हुई कमी को रोका जा सकता है।

[redacted]

चारे को संरिक्षत कैसे करें

कृषि विज्ञान केन्द्र, सुजानी, देवघर

अतिरिक्त चारे को कमी के समय के लिए सुरक्षित रखने की पद्धति को चारा संरक्षण कहते हैं। उत्तरी भारत में चारे की कमी नवम्बर-जनवरी, मई-जुन में पायी जाती है। इस कमी को पूरा करने के लिए, चारे का 'साइलेज' व 'हे' बनाकर चारे को सुरक्षित कर सकते हैं ताकि यह चारे की कमी के समय उपयोग में लाया जा सके। साइलेज मक्का, जई, मकचरी, ज्वार इत्यादि की बनाई जा सकती है। साइलेज बनाने के सम्बन्ध में जानकारी नीचे दी जा रही है।

ज्वार, जई, मक्का को उस समय काटे जब भुट्टों के दाने थोड़े-थोड़े पकने आरम्भ हो। ऐसी किस्में जिनमें इस अवस्था पर पत्तियाँ और डंठल हरे रहते हों तो उनको थोड़ा देर से काटे ताकि दोनों में कार्बोहाइड्रेट और इकट्ठा हो जाए। ये कार्बोहाइड्रेड कुछ हद तक लैक्टिक एसिड एवं प्रोपायनिक अम्ल में बदल जाता है और साइलेज को फुंदी या दुर्गन्ध उत्पन्न करने वाली जीवाणुओं को पनपने से बचाता है। कार्बोहाइड्रेट का अधिक भाग पशु को शक्ति देने का काम में आता है यदि फसल इस अवस्था में पहले ही काट ली जायेगी तो उसमें लैक्टिक अम्ल कम मात्रा में उत्पन्न होगा और साथ ही साइलेज भी कम शक्ति वाला होगा जो कि पशु के लिए पौष्टिक नहीं रहेगा। सम्भव हो सके तो हरे चारे में 65 प्रतिशत नमी